

---

# Praise of Rama by Jatayu from Adhyatma Ramayana

---

श्रीरामस्तुतिः जटायुप्रोक्ता अध्यात्मरामायणे

---

## Document Information

---

Text title : rAmastuti 4 jaTAyuproktam adhyAtmarAmayaNe

File name : rAmastutijaTAyuproktamAdhyatmaRamayana.itx

Category : raama, stotra

Location : doc\_raama

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Latest update : July 10, 2013

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 29, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीरामस्तुतिः जटायुप्रोक्ता अध्यात्मरामायणे



अगण्यगुणमाधमव्ययमप्रमेय-

मभिलजगत्सृष्टिस्थितिसंछारमूलम् ।

परमं परापरमानन्दं परात्मानं

वरदमडं प्राणतोऽस्मि सन्ततं रामम् ॥ १ ॥

मडितकटाक्षविक्षेपितामरशुभं

रडितावधिसुभमिन्द्रिरामनोडरम् ।

श्यामलं जटामकुटोज्ज्वलं चापशर-

डोमलकरांभुजं प्राणतोऽस्म्यडं रामम् ॥ २ ॥

भुवनकमनीयउपमीडितं शत-

रविभासुरमभीष्टप्रदं शरणदम् ।

सुरपादमूलरथितनिलयं

सुरसञ्चयसेव्यं प्राणतोऽस्म्यडं रामम् ॥ ३ ॥

भवकाननदवदडननामधेयं

भवपङ्कजभवभुभद्वैवतं देवम् ।

दनुजपतिकोटिसडस्रविनाशं

मनुजकारं डरिं प्राणतोऽस्म्यडं रामम् ॥ ४ ॥

भवभावनाडरं भगवत्स्वउपिणं

भवभीविरडितं मुनिसेवितं परम् ।

भवसागरतरणान्घ्रिपोतकं नित्यं

भवनाशायानिशं प्राणतोऽस्म्यडं रामम् ॥ ५ ॥

गिरिशगिरिसुतालुड्यांभुजवासं

गिरिनायकधरं गिरिपक्षारिसेव्यम् ।

सुरसञ्चयदनुजेन्द्रसेवितपादं

सुरपमणिनिभं प्राणतोऽस्म्यडं रामम् ॥ ६ ॥

परदारार्थपरिवर्जितमनीषिणां

परपूरुषगुणभूतिसन्तुष्टात्मनाम् ।

परलोकैकछितनिरतात्मनां सेव्यं

परमानन्दमयं प्राणतोऽस्यत्वं रामम् ॥ ७ ॥

स्मितसुन्दरविकसितवङ्गत्रांभोरुदं

स्मृतिगोचरमसितांबुदकलेवरम् ।

सितपङ्कजयारुनयनं रघुवरं

क्षितिन्दिनीवरं प्राणतोऽस्यत्वं रामम् ॥ ८ ॥

जलपात्रौघस्थितरविमण्डलसमं

सकलयरायरञ्जुवान्तःस्थितम् ।

परिपूर्णात्मानमद्भयमव्ययमेकं

परमं परापरं प्राणतोऽस्यत्वं रामम् ॥ ९ ॥

विधिमाधवशम्भुरुपभेदेन गुण-

त्रितयविराजितं डेवलं विराजन्तम् ।

त्रिदशमुनिजनस्तुतमव्यक्तमजं

क्षितिजामनोहरं प्राणतोऽस्यत्वं रामम् ॥ १० ॥

मन्मथशतकोटिसुन्दरकलेवरं

जन्मनाशाद्विहीनं चिन्मयं जगन्मयम् ।

निर्मलं जन्मकर्माधारमप्यनाधारं

निर्मममात्मारामं प्राणतोऽस्यत्वं रामम् ॥ ११ ॥

एति अध्यात्मरामायणे जटायुप्रोक्ता श्रीरामस्तुतिः समाप्ता ।

Encoded and proofread by PSA Easwaran

---

*Praise of Rama by Jatayu from Adhyatma Ramayana*

pdf was typeset on June 29, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

